राजा भोज

सन्तराम वत्स्य

राजा भोज

सन्तराम वत्स्य

[भारत सरकार की नवसाक्षर-साहित्य-प्रतियोगिता में पुरस्कृत]

☐ टेरीटोरियल कौंसिल हिमाचल प्रदेश की अगस्त सन् '६० में प्रकाशित सूची के अनुसार प्राइमरी स्कूल-पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत

☐ सेन्ट्रल लाइब्रेरी कमेटी चण्डीगढ़ के सरकुलर नं० पी० आर० लाय० ५८/१३३५, दि० २३-१-५८ के अनुसार पंचायत-पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत

☐ विकास आयुक्त उत्तर प्रदेश की सन् '५५ में प्रकाशित सूची के अनुसार विकास खण्डों के लिए स्वीकृत

☐ शिक्षा संचालक राजस्थान की १६५७-५८ में प्रकाशित सूची के अनुसार माध्यमिक शालाओं के पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत।

मूल्य : ८ रुपये

प्रकाशक : **पुस्तकायन,** (सुबोध पॉकिट बुक्स का उपक्रम) २/४२४०-ए, अंसारी रोड, नई दिल्ली-११०००२ / **संस्करण** : १६८८ / **मुद्रक** : अजय प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२
चित्रांकन : हरिपाल त्यागी

राजा भोज

भारत में ऐसे कम लोग हैं, जो राजा भोज का नाम नहीं जानते। राजा भोज को हुए लगभग साढ़े-नौ सौ वर्ष हो चुके हैं, लेकिन उनका नाम आज भी अमर है। अक्सर घर-घर उनके नाम की चर्चा होती है। यह चर्चा उनके प्रतापी अथवा बड़े राजा होने के कारण नहीं, बल्कि उनके स्वयं एक बहुत बड़े विद्वान् और कवि होने तथा विद्वानों और कवियों का खूब आदर-सम्मान करने के कारण होती है।

गुण की सच्ची परख वही कर सकता है जो स्वयं गुणी हो। राजा भोज स्वयं विद्वान् और कवि थे, इसलिए वे विद्वानों और कवियों का जी खोलकर आदर करते। और बदले में विद्वानों और कवियों ने सदा के लिए उनका नाम अमर बना दिया। लेकिन उनकी अपनी विद्वत्ता और गुण-ग्राहकता उनके अमर होने में कहीं अधिक कारण है। एक-एक अच्छी कविता पर लाखों का पुरस्कार देने की बात उनके बारे में आज भी मशहूर है। लाखों के पुरस्कार की बात में अतिशयोक्ति हो सकती है, मगर इस बात में

तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं कि कवियों और विद्वानों का खूब आदर करने वाले राजाओं में राजा भोज का नाम सबसे आगे लिया जाता है।

भोज मालवा के राजा थे और उनकी राजधानी 'धारा' नामक नगर में थी। वे परमार नामक क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए। इनके दादा का नाम श्रीहर्ष था, जिसका दूसरा नाम सिंहभट्ट भी था। श्रीहर्ष के दो पुत्र हुए, जिनमें बड़े का नाम मुन्ज अथवा वाक्पतिराज था और छोटे का सिन्धुल अथवा सिन्धुराज। सिन्धुल से भोज का जन्म हुआ। मुन्ज का अपना कोई पुत्र न होने के कारण उन्होंने भतीजे भोज को गोद लिया और उसे ही अपना युवराज अर्थात् राजगद्दी का उत्तराधिकारी बनाया।

परमार वंश की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा जाता है कि किसी युग में ऋषि वसिष्ठ आबू पर्वत पर अपना आश्रम बनाकर रहते थे। विश्वामित्र और वसिष्ठ में शत्रुता थी। इसलिए एक दिन विश्वामित्र वसिष्ठ की गाय छीनकर ले चले। इस पर वसिष्ठ की धर्मपत्नी अरुन्धती रोने लगी। तब वसिष्ठ को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने अथर्ववेद का एक मन्त्र पढ़कर अपने हवन-कुण्ड में आहुति डाली। देखते-ही-देखते उस कुण्ड से एक वीर पुरुष उत्पन्न हुआ। वसिष्ठ की आज्ञा से उसने

विश्वामित्र के आदमियों को मार भगाया और उनसे
गाय छीन ली। तब वसिष्ठ ने खुश होकर उस वीर

पुरुष का नाम 'परमार' रखा, जिसका अर्थ होता है 'शत्रुओं को मारने वाला।' पर=शत्रु, मार=मारने वाला। इसी वीर पुरुष परमार के वंश में राजा भोज के पूर्वज राजा उपेन्द्रराज हुए, जिन्होंने मालवा में परमार राज्य की नींव डाली।

प्रसिद्ध घुमक्कड़ अलबेरूनी ने भारत-यात्रा का जो वृत्तान्त लिखा है, उसमें भोज के वंश से सम्बन्ध रखने वाली एक अद्‌भुत कथा लिखी है। वह लिखता है, "मालवे की राजधानी धारा में, जहाँ पर इस समय राजा भोज राज्य करता है, राजमहल के द्वार पर चाँदी का एक लम्बा टुकड़ा पड़ा हुआ है। उसमें मनुष्य की शक्ल दिखाई देती है।' लोग इसकी कथा इस प्रकार बताते हैं—

पुराने जमाने में एक मनुष्य किसी खास किस्म की कोई रसायन लेकर वहाँ के राजा के पास पहुँचा। उस रसायन का यह गुण था कि उसके प्रयोग से मनुष्य अजर, अमर, अजेय और मनचाहा काम करने में समर्थ हो सकता था। उस मनुष्य ने राजा को उस रसायन का सारा हाल बताकर कहा कि आप अमुक समय अकेले आकर इसका गुण आजमा सकते हैं। इस पर राजा ने उसकी बात मान ली। उस मनुष्य की बताई हुई सब चीजें इकट्ठी करने को अपने नौकरों को

आज्ञा दी।

इसके बाद कई दिनों तक वह आदमी कड़ाही में तेल गरम करता रहा। जब तेल गाढ़ा हो गया, तब वह राजा से बोला कि आप इस कड़ाही में कूद पड़ें, तो मैं बाकी का काम भी समाप्त कर डालूँ। परन्तु राजा को उस खौलते हुए तेल में कूदने की हिम्मत न हुई।

यह देख उस आदमी ने कहा, यदि आप कूदने से डरते हैं तो मुझे आज्ञा दीजिए ताकि मैं ही यह सिद्धि पा लूँ। राजा ने यह बात मान ली। इस पर उस आदमी ने दवाइयों की कई पुड़ियाँ निकालकर राजा को दीं और समझाया कि इस-इस प्रकार के चिह्न दिखाई देने पर यह-यह दवाई तेल में डाल दें। इस प्रकार राजा को समझा-बुझाकर वह आदमी उस कड़ाही में कूद पड़ा और गलकर गाढ़ा तरल पदार्थ बन गया। राजा बताये हुए अनुसार एक-एक दवाई उसमें डालता गया। जब एक दवाई बाकी रह गई तो राजा के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि अगर सचमुच यह आदमी जीवित होकर अजर-अमर और अजेय हो गया तो मेरी और मेरे राज्य की क्या दशा होगी! यह विचार मन में आने पर अन्तिम दवाई तेल में न डाली। इससे जब वह कड़ाही ठंडी हो गई तो वह

घोल ऊपर बताये आदमी की शक्ल के चाँदी के टुकड़े के रूप में जम गया।

उपेन्द्रराज की नौवीं पीढ़ी में राजा भोज हुए। राजा भोज का समय सन् १०१० ईसवी के आस-पास बताया जाता है। राजा भोज के बाद उनके वंश में अठारह राजा और हुए, जिनमें अन्तिम परमार राजा का नाम जयसिंहदेव था।

भोज के ताऊ राजा मुन्ज अपने शत्रु तैलप नामक तैलंग राजा से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। उस समय युवराज भोज बिल्कुल बालक थे। इसलिए भोज के बालिग होने तक उनके पिता सिन्धुल मालवे की राजगद्दी पर बैठे। कुछ वर्ष बाद सिन्धुल भी गुजरात के सोलंकी राजा चामुण्डराज के साथ लड़ाई में मारे गये। पिता के मारे जाने पर राजकुमार भोज बीस वर्ष की उम्र में राजगद्दी पर बैठे। इनकी मृत्यु सन् १०६५ ईसवी के आस-पास बताई जाती है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि करीब ४५ वर्ष राज करने के बाद लगभग ६५ साल की उम्र में राजा भोज इस संसार से चल बसे। लेकिन उनका यशरूपी शरीर आज भी संसार में मौजूद है। कहा जाता है कि विक्रमादित्य के बाद भोज जैसा प्रतापी और दानी राजा दूसरा कोई नहीं हुआ।

राजा भोज जितने विद्वान् और दानी थे, उतने ही वीर भी। राजसिंहासन पर बैठते ही उन्होंने अनेक राजाओं को युद्ध में हराया। उत्तर में नर्मदा और दक्षिण में गोदावरी नदी तक इनके राज्य की सीमा फैल गई। उन्होंने कोंकण और कर्णाटक के राजाओं को भी युद्ध में हराकर अपने राज्य को फैला दिया। मुसलमानों के साथ भी उनके लड़ने की बात पोथियों में लिखी है। विद्वानों का कहना है कि गजनी के राजा महमूद गजनवी से लड़ने में, लाहौर के राजा जयपाल की भी राजा भोज ने खूब मदद की थी। मेवाड़ भी भोज के अधीन था।

भोज के पूर्वज उज्जैन में राजधानी बनाकर मालवे पर राज करते रहे, किन्तु राजा भोज ने अपनी राजधानी धारा नगर में बनाई, जिसे अब 'धार' कहते हैं। इसी से राजा भोज को 'धारेश्वर' अर्थात् धारा का मालिक कहा जाता था। इसके अलावा भोज की दूसरी अनेक उपाधियाँ भी थीं। जैसे—परम भट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर और मालव-चक्रवर्ती।

राजा भोज ने चेदि देश के राजा गांगेयदेव और तैलंगाने के राजा जयसिंह पर विजय पाने की याद में धारा नगर में लोहे की एक बड़ी लाट खड़ी की थी। इसी के पास उन्होंने साधु-सन्तों के लिए एक मठ

भी बनवाया था। धारा पर जब मुसलमानों का अधिकार हो गया, तो दिलावर खाँ गौरी नामक मुसलमान राजा ने उस मठ को मसजिद बना दिया जो आज भी 'लाट मसजिद' के नाम से मौजूद है। लेकिन बाद में लोगों ने उस लोहे की लाट के बारे में एक मनोरंजक कहानी गढ़ डाली। कहानी इस प्रकार है—

किसी समय धारा नगर में गांगली नामक एक तेलन रहती थी। उसका डीलडौल किसी राक्षसी से कम न था। यह लाट उस तेलन के तराजू की डण्डी थी। और लाट के पास अब भी पड़े बड़े-बड़े पत्थर उसके तोलने के बाट-बटखरे थे। उस तेलन का घर नालछा नामक गाँव में था। जब वह तेल बेचकर अपने घर लौटती तो अपना लहँगा झाड़ती। उसके लहँगे से गिरे हुए बालू का ढेर बाद में पहाड़ बन गया। और वह पहाड़ बाद में 'तैलन-टेकरी' के नाम से मशहूर हुआ। यह तैलन-टेकरी आज भी नालछा गाँव में मौजूद है।

इस तेलन के नाम पर एक कहावत भी चालू है— 'कहाँ राजा भोज और कहाँ गांगली तेलन।' अर्थात् गांगली डील-डौल में भले ही बड़ी हो जाय, पर यह राजा भोज की बराबरी नहीं कर सकती।

इस कहानी और कहावत को लेकर विद्वानों का अनुमान है कि गांगली तेलन की बात बिलकुल कल्पित है। पहले यह कहावत शायद इस रूप में रही होगी— 'कहाँ राजा भोज और कहाँ गांगेय और तैलंग राज।' बाद में गांगेय का निरादर-सूचक बिगड़ा हुआ नाम 'गांगली' बन गया और इसी प्रकार तैलंगाने या तैलंग से 'तेलन'।

आजकल का भोपाल भी राजा भोज का ही बनवाया नगर कहा जाता है। भोजपुर या पहले उसका नाम भोजपालित रहा होगा, जो बाद में बिगड़ कर भोपाल बन गया। भोपाल की विशाल झील भी भोज की बनाई कही जाती है।

राजा भोज ने अपनी राजधानी धारा में एक बहुत बड़ी संस्कृत पाठशाला भी बनवाई थी, जिसका नाम था 'भोजशाला'। उसके पास एक कुआँ भी बनवाया, जिसे 'सरस्वती कूप' कहा जाता था। लोगों में विश्वास था कि जो कोई इस कुएँ का पानी पी ले, उस पर सरस्वती की कृपा अवश्य होती है। आजकल इस कुएँ को 'अक्कलकुई' कहते हैं।

राजा भोज के समय धारा नगर खूब खुशहाल और सुरक्षित था। नगर के चारों ओर चारदीवारी और खाई थी। यह खाई आजकल अनेक तालाबों में

बैठी हुई है। लोग इसे 'साढ़े बारह तालाब' के नाम से पुकारते हैं। नगर में चौरासी चौराहे थे और चौरासी बड़े-बड़े मन्दिर भी। 'शारदा-सदन' नाम की एक बड़ी संस्था थी, जिसमें देश-विदेश के बड़े-बड़े विद्वान् और कवि निवास करते थे। इस शारदा-सदन में सरस्वती की एक विशाल और सुन्दर मूर्ति भी थी, जिसे अँग्रेज लन्दन के अपने ब्रिटिश संग्रहालय में आज भी सुरक्षित रखे हुए हैं। इस मूर्ति के पैरों के नीचे एक लेख भी खुदा है, जिसमें राजा भोज द्वारा उस मूर्ति को बनवाने की बात लिखी है।

राजा भोज स्वयं शिवभक्त थे, पर दूसरे धर्म या सम्प्रदाय के लोगों से वे घृणा नहीं करते थे। उनके दरबार में कई जैनी विद्वान् भी आदरपूर्वक बैठा करते थे। प्रतिदिन लगभग ५०० विद्वान् उनके दरबार को सुशोभित किया करते थे।

● ● ●

राजा भोज नित्यकर्म से छुट्टी पाकर प्रतिदिन नियत समय पर अपने दरबार में आ जाते और देश-विदेश से आये हुए याचकों को उनकी इच्छा के अनुसार दान देते। राजा की इस उदारता पर रोहक नामक मंत्री को बड़ी चिन्ता हुई। वह सोचने लगा—यदि राजा का यही रंग-ढंग चालू रहा तो बहुत जल्द खजाना

खाली हो जायगा। राजा को मुसीबत का सामना करना पड़ेगा। जहाँ तक हो बहुत जल्द राजा का हाथ

रोकना चाहिये। लेकिन खुलेआम राजा से कुछ कहने या हाथ रोकने का साहस उसे नहीं हुआ। दरबार के दरवाज़े पर उसने यह वाक्य लिख दिया—"मुसीबत के समय के लिए धन बचा रखना चाहिये।"

दूसरे दिन सवेरे दरबार में प्रवेश करते समय राजा भोज की नजर उस वाक्य पर जा पड़ी। पूछने पर लिखने वाले का नाम उन्हें मालूम न हो सका। तब उन्होंने उसी वाक्य के नीचे दूसरा वाक्य लिख दिया—

"भाग्यवानों को मुसीबत कैसी ?"

मन्त्री ने उस वाक्य को पढ़ा और उसके नीचे फिर तीसरा वाक्य लिख दिया—

"कभी-कभी भाग्य भी नाराज हो जाता है।"

राजा ने उस वाक्य को भी पढ़ा और उसके नीचे एक और वाक्य लिख दिया—

"भाग्य के नाराज होने पर तो जमा किया हुआ धन भी नष्ट हो जाता है।"

और तब अन्त में मन्त्री को माफी माँगनी पड़ी। इस घटना से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजा भोज कितने दानी थे!

● ● ●

राजा भोज के बचपन के बारे में एक और कहानी

काफी मशहूर है। उस कहानी में भोज के पिता सिन्धुल को मुन्ज का बड़ा भाई होना कहा गया है। कहानी यों है :

राजा सिन्धुल की मृत्यु के समय भोज की उम्र केवल पाँच वर्ष थी। इसी से सिन्धुल ने अपने छोटे भाई मुन्ज को राजगद्दी देकर भोज को उसकी गोद में सौंप दिया। कुछ दिन बाद एक ज्योतिषी राज-दरबार में आया। मुन्ज ने भोज की जन्मपत्री उसे देखने को दी। जन्मपत्री देखकर ज्योतिषी ने बताया—"भोज के भाग्य का वर्णन तो ब्रह्माजी भी नहीं कर सकते। मैं भला क्या कर सकता हूँ। लेकिन इतना अवश्य बता सकता हूं कि भोज पचपन वर्ष, सात महीने और तीन दिन बंगाल सहित सारे दक्षिण देश पर राज्य करेंगे।"

कहते हैं कि इस भविष्यवाणी के सुनते ही राजा मुन्ज का चेहरा उतर गया। अब भोज उसे एक भयानक प्रतिद्वन्द्वी के रूप में दिखाई दिया। उसे रात-भर नींद न आई। दूसरे दिन सवेरे ही उसने मन्त्री वत्सराज को बुलाकर आज्ञा दी—"पाठशाला से भोज को भुव-नेश्वरी देवी के जंगल में ले जाकर मार डालो और उसका कटा सिर मेरे पास ले आओ।"

वत्सराज ने पहले तो समझा-बुझाकर मुन्ज को इस काम से रोकना चाहा। पर मुन्ज शान्त होने के

बजाय उस पर भी नाराज हो पड़ा। अब राजा का हुक्म मानने के सिवा वत्सराज के लिए और कोई चारा न रह गया। वह पाठशाला गया और वहाँ से भोज को भुवनेश्वरी के जंगल में ले जाकर राजा की आज्ञा कह सुनाई।

भोज ने बड़े धैर्य से वह आज्ञा सुनी। फिर वत्सराज से कहा—"आप निर्भीक अपने राजा की आज्ञा का पालन करें, किन्तु मैं एक पत्र आपको देना चाहता हूँ, जिसे मेरे चाचा राजा मुन्ज तक आप अवश्य पहुँचा दें।"

वत्सराज राजी हो गया। और भोज ने बड़ का एक पत्ता लेकर उसको दोनी बनाई। फिर छुरी से अपनी जाँघ चीरकर उसका खून उस दोनी में भर दिया। तिनके की कलम से एक दूसरे पत्ते पर एक श्लोक लिखकर वत्सराज के हाथ थमा दिया। फिर वह मरने को तैयार हो गया। लेकिन वत्सराज का हृदय अब स्थिर न रह सका। उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने हाथ जोड़ राजकुमार से माफी मांगी। उसे रथ पर बैठाकर अपने घर ले जाकर छिपा दिया। एक कुशल मूर्तिकार से उसने भोज के कटे सिर की मूर्ति तैयार कराई। रात के अन्धेरे में उस बनावटी सिर को ले जाकर उसने मुन्ज के सामने रख दिया।

मुन्ज ने एक बार उस सिर की ओर दृष्टि डालकर वत्सराज से पूछा—"मरते समय भोज ने क्या कहा ?"

और जवाब में वत्सराज ने चुपचाप भोज का लिखा वह पत्र राजा के सामने पेश कर दिया। रानी ने सामने दीपक ला दिया और राजा उसकी रोशनी में पत्र पढ़ने लगा। पत्र में लिखे श्लोक का अर्थ नीचे लिखे अनुसार था :

'हे राजा! सतयुग को सुशोभित करने वाला राजा मांधाता भी इस संसार से चला गया। और समुद्र में जिसने पुल बांधा, वह रावण-वध-कर्त्ता राजा राम भी आज नहीं है! इसी प्रकार युधिष्ठिर आदि दूसरे राजाओं को भी इस संसार से कूच करना ही पड़ा, किसी के भी साथ यह पृथ्वी न जा सकी, मगर मानता हूँ, आपके साथ अवश्य जायगी।'

इस श्लोक का मतलब समझकर राजा मुञ्ज को इतना पछतावा हुआ कि वह स्वयं मरने को तैयार हो गया। वत्सराज ने प्रधानमंत्री बुद्धिसागर के कान में भोज के जीवित रहने की बात बता दी। तब उन दोनों ने मिलकर राजा के सामने एक योगी को प्रकट किया। योगी ने योगबल से भोज की लाश को फिर से जीवित कर देने की बात राजा से कही और उसी रात उसने जीवित भोज को लाकर राजा के सामने उपस्थित कर दिया। राजा ने भोज को छाती से लगा लिया और राजसिंहासन पर भोज को बैठाकर स्वयं पत्नी-सहित

वन में तपस्या करने चला गया।

● ● ●

एक बार रात में अचानक राजा भोज की नींद खुली। खिड़की से बाहर देखा तो सारा नगर चांदनी से नहा रहा है। और फिर आकाश में चांद को देखा तो मोहित हो देखते ही रह गये। देखते-ही-देखते उनके मुंह से कविता के दो पद निकल पड़े, जिनका अर्थ यह था—"चांद के भीतर बादल के छोटे-छोटे टुकड़े जैसे जो चिह्न सुशोभित हो रहे हैं, उन्हें लोग खरगोश कहते हैं। पर मेरी समझ में यह खरगोश नहीं है।" कविता के इन दो पदों को वे बार-बार दुहराने लगे। लेकिन पूरी कविता तो चार पदों से बनती है। शेष दो पद उन्हें सूझ नहीं रहे थे।

इतने में उन बाकी दो पदों को पूरा करने वाली एक आवाज उनके कान में आई। कविता में ही वह आवाज़ बोली—"राजा! मेरी राय में तो चन्द्रमा के भीतर दिखाई देने वाले वे टुकड़े, आपके शत्रुओं की विरहिणी स्त्रियों की तिरछी आंखों की चिनगारियों से पड़े सैकड़ों दाग हैं।" मतलब यह कि आपसे युद्ध में लड़कर अनेक राजा परलोक सिधार चुके हैं। उनकी स्त्रियां अब काम से व्याकुल हो चन्द्रमा पर अपनी आंखों के अंगारे बरसा रही हैं। अर्थात् आप बहुत बड़े वीर

है; दिग्विजयी हैं।

जब राजा ने उस आवाज की ओर नजर दौड़ाई तो देखा कि महल के कोने में खड़ा बोलने वाला एक पुरुष है। पूछने पर मालूम हुआ कि उसने चोरी करने के विचार से महल में प्रवेश किया है। राजा ने रात-भर के लिए उसे एक कमरे में बन्द करा दिया। और दूसरे दिन सवेरे उसे राजदरबार में बुलवाकर उसकी कविता से खुश हो दस करोड़ अशर्फियाँ उसे इनाम दीं।

● ● ●

राजा भोज गरीबों पर कितनी दया करते थे, इस उदाहरण से समझिये। एक बार एक गरीब पंडित उनके दरबार में आया और राजा को एक कविता सुनाई, जिसका मतलब यह था—"महाराज ! मेरी माँ न मुझसे खुश रहती है न अपनी बहू से। बहू न सास से खुश रहती है, न अपने पति मुझ से। और न मैं अपनी माँ से खुश रहता हूँ, न अपनी पत्नी से। तो बताइए कि इसमें दोष किसका है ?"

राजा भोज को समझते देर नहीं लगी कि इसमें दोष गरीबी का है। और तब उस गरीब ब्राह्मण को राजा ने इतना धन दिया कि घर में आपसी कलह या मनमुटाव की कोई गुञ्जायश ही नहीं रह गई।

इसी प्रकार की दूसरी कथा भी है। एक बार

जाड़े की रात में राजा भोज वेश बदलकर नगर में घूम रहे थे। घूमते-घूमते एक मन्दिर के पास पहुँचे। एक गरीब अपनी दशा पर आप तरस खाकर एक कविता बोल रहा था, जिसका तात्पर्य था—"मैं बड़ी कठिनाई से जाड़ा बर्दाश्त कर रहा हूँ। माघ के ठण्डे जल की तरह चिन्ता-रूपी समुद्र में डूबा हुआ हूँ। बुझी हुई अग्नि को फूंकते समय भी मेरे होंठ थर-थर काँप रहे हैं। भूख से मेरा पेट सूखा हुआ है। अपमानित पत्नी की तरह नींद मुझसे रूठकर कहीं दूर जा चुकी है। और किसी सुपात्र को दिये हुए धन की तरह यह रात खतम होना ही नहीं चाहती।"

राजा ने चुपचाप उसकी दर्द-भरी कहानी सुन ली। और दूसरे दिन सवेरे ही उसने उस ब्राह्मण को बुलवा भेजा। फिर उससे पूछा कि तुमने जाड़े का इतना समय कैसे गुजारा ? ब्राह्मण ने कविता में ही जवाब दिया, जिसका मतलब यह था—"महाराज ! जानु, भानु और कृशानु की मदद से मैंने जाड़े का समय काटा।" अर्थात् रात को जानु यानी घुटनों से छाती सटाकर, दिन को भानु यानी सूर्य की धूप में बैठकर और सुबह-शाम को कृशानु यानी आग तापकर।

राजा ने उस ब्राह्मण को गरीब होने के अलावा बहुत बड़ा कवि समझकर उसे तीन लाख अशर्फियाँ

इनाम दी ।

● ● ●

राजा भोज के समय में भी राजदरबारों का यह हाल था कि पहले से डटे हुए दरबारी लोग किसी नये व्यक्ति का प्रवेश आसानी से नहीं होने देते थे । कवि शेखर ने धारा नगर में पहुँचकर राज-सभा में प्रवेश करने की खूब कोशिश की, पर दरबारियों के षड्यन्त्र के कारण असफल रहा। बेचारा वहाँ पड़ा-पड़ा गरीबी में जीवन बिताने लगा। एक दिन राजा भोज हाथी पर बैठकर नगर के उस हिस्से से गुजर रहे थे, जहाँ शेखर जमीन पर पड़े दानों को बीन रहा था।

भोज ने उसे देखकर तिरस्कार भरे स्वर में कहा—"जो आदमी अपना पेट भी नहीं भर सकता, उसके पृथ्वी पर जन्म लेने से क्या फायदा ?"

तब उस गरीब शेखर ने जवाब दिया—"जो समर्थ होकर भी दूसरे का भला नहीं कर सकता, उसके पृथ्वी पर जन्म लेने से क्या फायदा ?"

राजा इस तीखे जवाब से तनिक झेंपकर फिर बोला—"माता ! तू भीख माँगकर पेट भरने वाले पुत्र को पैदा ही न कर !"

तब शेखर भी जैसे-को-तैसा जवाब देते हुए बोला—"माता पृथ्वी ! तू याचकों की प्रार्थना पर ध्यान न देने

वाले पुरुष को अपने ऊपर धारण ही न कर !"

राजा को अब समझते देर न लगी कि यह भिख-

मंगा दीखने वाला आदमी दरअसल भिखमंगा नहीं है। राजा ने उसका परिचय पूछा। भिखमंगे ने जवाब दिया—"महाराज ! मैं शेखर नाम का कवि हूं। मगर आपके दरबारी विद्वानों ने मेरा वहाँ प्रवेश नहीं होने दिया। इसलिए मुझे यह रास्ता अपनाना पड़ा।"

राजा ने शेखर को अपने दरबार में बुला लिया। और बहुत-सा धन देकर उसे संतुष्ट कर दिया।

● ● ●

यह पहले लिखा जा चुका है कि राजा भोज के दरबार में सभी मत के कवि और विद्वान् थे। धनपाल नाम का जैनी कवि बड़ा चतुर था। वह अनेक उपायों से राजा के मन को हिंसा से अहिंसा की ओर मोड़ने की कोशिश करता।

एक बार राजा भोज शिकार खेलने चले। धनपाल कवि भी उनके साथ था। राजा ने कविता में ही उससे पूछा, जिसका मतलब यह था—"धनपाल ! क्या कारण है कि हिरन तो आसमान की ओर कूदते हैं और सुअर जमीन खोदते हैं ?"

धनपाल ने चतुराई से जवाब दिया—"महाराज ! आपके शस्त्र की मार से घबराकर हिरन तो चन्द्रमा की गोद में बैठे अपने जाति के मृग की शरण जाना चाहते हैं, और सुअर जाना चाहते हैं पृथ्वी के उठाने

वाले वाराह (सुअर) रूपधारी भगवान् विष्णु की शरण में।''

फिर भी राजा पर कोई खास असर नहीं हुआ। उसने एक हिरन पर तीर चलाया। हिरन घायल होकर तड़पने लगा। तब राजा ने उस दृश्य का वर्णन करने के लिए धनपाल से कहा।

धनपाल झट संस्कृत कविता में बोला, जिसका मतलब यह था—''सर्वनाश हो तुम्हारे इस पौरुष का, जिसमें जरा भी दया नहीं! यह अन्याय है! शरणागत का कोई कसूर नहीं। अफसोस कि दुनिया में कोई किसी को पूछने वाला नहीं! इसी से तो बलवान् दुर्बल को मारते हैं।''

कहते हैं कि यह सुनकर भोज को बड़ा क्रोध आया। इस पर धनपाल ने फिर कहा—''महाराज! मरता हुआ दुश्मन भी यदि मुँह में तिनका रख ले तो उसे छोड़ देते हैं। मगर ये पशु बेचारे तो हमेशा ही तिनका (घास) खाते हैं! फिर ऐसी हालत में ये क्यों मारे जाते हैं?''

इस बार राजा भोज पर धनपाल के कथन का खूब असर हुआ। राजा ने उस दिन से शिकार करना छोड़ दिया।

जब वे शिकार से लौट रहे थे, संयोग से रास्ते पर

ही एक यज्ञ हो रहा था। राजा भोज की नजर यज्ञ-मंडप पर जा पहुँची। बलि के लिये खम्भे से बँधा हुआ बकरा मिमिया रहा था। राजा ने धनपाल से उस बकरे के मिमियाने का कारण पूछा। और धनपाल ने उसके मिमियाने का कारण इस प्रकार बताया—"महाराज! यह बकरा कह रहा है—न तो मुझे स्वर्ग के सुख की इच्छा है और न उसके लिए तुझसे प्रार्थना ही की है। अरे भले आदमी! मैं तो हमेशा घास खाकर ही सुखी हूँ। फिर तू मुझे स्वर्ग पहुँचाने के लिए मार क्यों रहा है? यदि यज्ञ में मारे हुए जीव सचमुच ही स्वर्ग में जाते हैं, तो तू अपने माँ, बाप, बच्चों और रिश्तेदारों को मारकर ही क्यों नहीं यज्ञ पूरा कर लेता ताकि उन्हें आसानी से स्वर्ग मिल जाय!"

राजा इस जवाब पर आश्चर्य-चकित रह गया। तब धनपाल ने फिर कहा—"अगर पशु-वध के लिए खम्भा खड़ा करके, पशुओं को मारकर खून का कीचड़ पैदा करके कोई स्वर्ग पहुँच जाय तो फिर नरक में कौन जायगा? महाराज! साधु-सज्जनों का मत तो यह है कि सत्य ही यज्ञ का खम्भा है; तप ही अग्नि है; और अपना कर्म ही यज्ञ की समिधाएँ (लकड़ियाँ) हैं। और ऐसे यज्ञ-कुण्ड में अहिंसा की आहुति देनी चाहिए।"

कहते हैं कि इस प्रकार धनपाल ने राजा भोज का

मन हिंसा और यज्ञ के आडम्बर से सदा के लिए मोड़ दिया।

● ● ●

राजा भोज के समय गुजरात पर राजा भीम राज कर रहा था। पड़ोसी होने के कारण दोनों की आपस में खूब लगती थी। एक बार राजा भोज ने भीम को बुद्धि की परीक्षा के लिए नीचे लिखी चार चीजें भेजने का संदेश भिजवाया।

ये चार चीजें इस प्रकार थी—

(१) वह चीज जो इस लोक में है, मगर परलोक में नहीं है।

(२) वह चीज जो परलोक में है, पर इस लोक में नहीं है।

(३) वह चीज जो इस लोक में भी है, परलोक में भी है।

(४) वह चीज जो इस लोक में भी नहीं है, परलोक में भी नहीं है।

संदेशा लेकर राजा भोज का दूत राजा भीम के दरबार में पहुँचा। दरबार का कोई भी विद्वान् इन चारों चीजों का मतलब समझ न सका। इस पर भीम को बड़ी चिन्ता हुई। बदनामी का डर था। तब भीम के दरबार की एक वेश्या ने इन चारों चीजों का

मतलब अपने राजा को समझा दिया।

उसने हर एक चीज़ का मतलब समझाते हुए कहा—"महाराज! राजा भोज ने जिस पहली चीज़ को भेजने को कहा है, वह 'वेश्या' है। क्योंकि वेश्या को इस लोक में सब तरह का सुख मिलता। लेकिन परलोक में उसे नहीं मिलता। दूसरी चीज़ का मतलब है 'तपस्वी'। तपस्वी को इस लोक में कोई सुख नहीं मिलता है लेकिन परलोक में उसे हर प्रकार का सुख मिलता है। तीसरी चीज़ का मतलब है 'दानी'। दानी आदमी इस लोक में भी सुख भोगता है, परलोक में भी। चौथी चीज़ का मतलब है 'जुआरी'। जुआरी आदमी को न इस लोक में सुख है, न परलोक में।

राजा भीम को उस वेश्या की बुद्धि पर बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने ये चारों चीजें भोज के दरबार में भेज दीं।

● ● ●

यह बताया जा चुका है कि राजा भोज के दरबार में बड़े-बड़े कवि थे। स्वयं भोज बहुत बड़े कवि थे। इसीलिए दरबार के कवियों ने उन्हें कविराज की उपाधि दे दी। दरबार के कवियों में कालिदास सबसे बड़े कवि थे। भोज सबसे अधिक आदर कालिदास का करते थे।

विद्वानों का मत है कि कालिदास नाम के कई कवि हुए हैं। सैकड़ों वर्ष पहले राजा विक्रमादित्य के दरबार के कवि कालिदास भोज के दरबार के कालिदास से भिन्न थे। जो भी हो लेकिन भोज के दरबार के कालिदास भी अपनी कविता में बुद्धि का कम कमाल नहीं दिखाते थे।

एक दिन राजा भोज अपने राजमहल में बिना खबर दिये ही जा पहुँचे। उनकी रानी लीलावती भी खूब पढ़ी-लिखी थी, कवि थी। उस समय वह अपनी एक सखी से बातें कर रही थी। राजा को इस प्रकार बगैर खबर किये आया देख, उसके मुख से यह शब्द निकल पड़ा—"मूर्ख।"

रानी ने आहिस्ता से यह शब्द कहा था, पर राजा ने उसे सुन लिया। वे चुपचाप राजमहल से वापस लौटकर दरबार में आ गये। रानी के मुँह से निकले उस 'मूर्ख' शब्द का मतलब उनकी समझ में नहीं आया। लेकिन मतलब वे समझना चाहते थे। इसलिए दरबार में जो भी पंडित उपस्थित होता उसका वे 'आओ मूर्ख !' कहकर स्वागत करते। इस नई घटना से उन पंडितों को भी कम आश्चर्य न हुआ। लेकिन असली रहस्य किसी को भी समझ न आ सका।

कुछ देर बाद कवि कालिदास भी दरबार में

पहुँचे। राजा ने उन्हें भी 'मूर्ख' शब्द से ही सम्बोधित किया। कालिदास को भी आश्चर्य हुआ। पर वे चुप

न रह सके। झट संस्कृत की एक कविता में उन्होंने राजा से पूछ लिया। कविता का अर्थ नीचे लिखे अनुसार था—

"राजा भोज! न तो मैं रास्ते में खाता हुआ चलता हूँ, न हँसता हुआ बोलता हूँ, न बीती बात पर अफसोस करता हूँ, न अपने किये कार्य पर घमण्ड करता हूँ, और न परस्पर बात करते हुए दो आदमियों के पास खड़ा होता हूँ। फिर मैं मूर्ख कैसे?"

यह सुनते ही राजा की समझ में आ गया कि क्यों रानी के मुँह से 'मूर्ख' शब्द निकला। क्योंकि रानी उस समय एक दूसरी स्त्री से बात करने में लगी थी। राजा ने प्रसन्न होकर इनाम वगैरह से कालिदास का खूब सम्मान किया।

● ● ●

एक दिन राजा भोज कालिदास के साथ बगीचे में टहल रहे थे। उसी समय मणिभद्र नाम का विद्वान् भी वहाँ आ पहुँचा। वह भी उनके साथ घूमने लगा। राजा भोज के दायें हाथ की ओर कालिदास थे और बायें हाथ की ओर मणिभद्र। कुछ देर घूमते-घूमते मणिभद्र को शरारत सूझी। उसने कालिदास का अपमान करने के विचार से बायें हाथ की प्रशंसा में एक कविता की, जिसका अर्थ इस प्रकार था—

"यह बायाँ हाथ लड़ाई के मैदान में दुश्मन का सिर पकड़ता है। तेज घोड़े को खीचकर रोकता है। ढाल और धनुष लेकर मैदान में हमेशा आगे बढ़ता है। मगर जुआ खेलना, चोरी करना, औरत को गले लगाना और कसम खाना बिल्कुल नहीं जानता।"

अभी तक मणिभद्र ने अपनी कविता के तीन पद ही कहे थे। लेकिन कालिदास उसका मतलब झट ताड़ गये। हँसकर झट चौथा पद वे स्वयं बोल उठे।

उस चौथे पद का मतलब यह था—"हाँ भाई! कहना तुम्हारा ठीक है। मगर विधाता ने इस बायें हाथ को दान देने के कार्य में अयोग्य समझकर इसके जिम्मे आबदस्त लेने का काम सौंप दिया।"

कालिदास का यह चमत्कार-युक्त जवाब सुनकर राजा भोज खूब हँसे और मणिभद्र खूब लज्जित हुआ।

● ● ●

कालिदास केवल कवि ही नहीं, अत्यन्त दयालु भी थे। मौका पड़ने पर वे राजा के दरबार में दूसरे असहायों की मदद भी करते थे।

एक बार एक गरीब ब्राह्मण गन्नों के टुकड़ों की एक छोटी-सी पोटली लेकर राजा भोज के दर्शन के लिये धारा की ओर चला। रास्ते में रात हो जाने के कारण एक जगह वह सो गया। किसी दुष्ट ने उसे

सोता देख गन्ने के सारे टुकड़े उसकी पोटली से निकाल लिये और उनकी जगह सूखी लकड़ियों के टुकड़े उसमें बांध दिये। दूसरे दिन ब्राह्मण ने बिना जाने ही चुपचाप वह पोटली ले ली और धारा की ओर चल पड़ा। दरबार में पहुँचकर उसने पोटली राजा को भेंट की। लेकिन पोटली खोलने पर उसमें सूखी लकड़ियाँ देखकर वह ब्राह्मण डर गया और राजा नाराज हो उठा।

उस ब्राह्मण की दशा देख कालिदास को दया आ गई। उन्होंने ब्राह्मण का पक्ष लेते हुए झट एक कविता सुनाई। उस कविता का आशय यह था—"महाराज! महाबली अर्जुन ने हरे-भरे वृक्षों से सुशोभित खांडव वन को जला डाला। और महाबली हनुमान ने सोने की लंका जला डाली। और शंकरजी ने सभी प्राणियों को सुख देने वाले कामदेव को जला डाला। लेकिन इनके यह काम ठीक तो नहीं महाराज! मैं जानूं तो तब यदि कोई सभी जनों को सताने वाली गरीबी को जला डाले।"

कालिदास के कहने का मतलब यह था कि यह गरीब ब्राह्मण लकड़ी के इन सूखे टुकड़ों के रूप में मानो अपनी गरीबी को लेकर यहां पहुँचा है। महाराज, मैं आपको जानूं तो तब यदि इस गरीब की गरीबी

आप मिटा दें। राजा भोज खुश हो गये। बहुत-सा धन देकर उस ब्राह्मण को सन्तुष्ट करके विदा कर दिया।

● ● ●

कहते हैं कि चारों ओर अपने दान की बड़ाई और दरबारी विद्वानों से प्रशंसा सुनने के कारण राजा भोज को अपने दानी होने का घमण्ड हो गया। उनके इस घमण्ड की बात उनके एक बूढ़े मन्त्री को मालूम हुई। अवसर पाकर इस बूढ़े मन्त्री ने राजा विक्रमादित्य के समय का दान-खाता बही में से निकालकर दिखा दिया। उस बही में जो दान की राशि लिखी थी, वह भोज की दान-राशि से कहीं अधिक थी, यह देखते ही राजा भोज का सारा घमण्ड जाता रहा।

● ● ●

राजा भोज और गुजरात के राजा भीम ने आपस में लिखा-पढ़ी करके कुछ नियम बना लिये थे। परन्तु एक बार राजा भोज ने उन नियमों की परवाह न करते हुए गुजरात वालों की सूझ-बूझ की परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने पत्र में लिख भेजा—

"जिसकी गुफा के द्वार पर बड़े-बड़े हाथियों के मस्तक चीरे गये हों, ऐसे बलवान् सिंह की हिरनों से न तो शत्रुता ही होती है और न मित्रता ही।"

भोज की इस घमण्ड-भरी बात को पढ़कर राजा भीम ने अपने दरबारी विद्वान् गोविन्दाचार्य को इसका उत्तर लिख भेजने को कहा। गोविन्दाचार्य ने इस प्रकार उत्तर लिखा—

"धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों के कालरूप भीम को ब्रह्मा ने उत्पन्न किया। भीम ने अपने सौ भाइयों को भी नहीं गिना, तब उसके लिए तेरे जैसे एक आदमी की क्या गिनती है?"

ऐसा करारा उत्तर पाकर भोज चुप हो रहा।

● ● ●

एक समय कवि राजशेखर अपनी गरीबी के दिनों में परिवार सहित उज्जयिनी में महाकाल के मन्दिर में सोया हुआ था। सब भूखे थे। रात को उसका लड़का भूख से व्याकुल होकर रोने लगा। बच्चे को रोटी के लिए रोते देख शेखर ने अपनी पत्नी से कहा—"प्यारी समझदार पत्नी! इन बच्चों को कुछ-न-कुछ खिला-पिलाकर किसी तरह गरमी का मौसम गुज़ार दे। फिर बरसात में जब तुम्बी, कद्दू, ककड़ी आदि फल लग जाएँगे तब हम राजाओं से भी अधिक सुखी हो जाएँगे।"

संयोग से उस समय भोज भी वेश बदले वहाँ घूम रहा था। उसने कवि की गरीबी जानकर उसे इतना

धन दिया कि वह धनवान् बन गया। इस बात की बड़ाई में कवि ने एक श्लोक कहा। उसका मतलब यों है—

"जिस सूखे हुए तालाब के कीचड़ में रहने वाले मेंढक मरियल से हो रहे थे, कछुए मिट्टी खोदकर उसमें छिप गये थे (पानी न होने के कारण), मछलियां दम तोड़ रही थीं, उसी तालाब पर बेमौसम के बादल ने बरस कर उसे ऐसा लबालब भर दिया कि हाथियों के झुंड-के-झुंड उसमें नहाते हैं और पानी पीते हैं।"

● ● ●

संकर्षण नामक एक अत्यन्त दरिद्र ब्राह्मण था। उसकी स्त्री बड़ी पतिव्रता थी। उसने समझा-बुझाकर ब्राह्मण को कुछ पुरुषार्थ करने के लिए तैयार किया।

ब्राह्मण ने सोचा—राजा भोज के पास चलें। कुछ-न-कुछ मिल ही जायेगा। और न सही तो एकाध गाय-भैंस तो मिल ही जायेगी। हमें अधिक चाहिए भी नहीं। बाल-बच्चों के लिए दूध हो जाया करेगा, हम दोनों जने छाछ पीकर ही रह लेंगे। पर खाली हाथ तो राजा के पास जाया नहीं जाता। और ले जाने के लिए पास कुछ है नहीं। आखिर एक बेल का फल उसे कहीं मिल गया। वह उसे ही लेकर धारा नगरी की ओर चल पड़ा।

पर जब भोज के दरबार में कालिदास आदि चौदह सौ पंडितों को बैठा देखा तो कुछ घबरा गया। राजदरबार में आने का उसका यह पहला ही अवसर था। कुछ क्षण बाद किसी तरह हिम्मत बटोर कर वह राजा के सामने गया और राजा भोज को आशीर्वाद दिया।

राजा भोज उसके रंग-ढंग से ही जान गया कि यह ब्राह्मण देवता पहली बार ही यहां आये हैं। इसलिए राजा भोज ने पूछा—कहिये ब्राह्मण देवता, कहां से पधारे हो?

ब्राह्मण ने उत्तर दिया—कैलास से आया हूँ महाराज।

अब राजा ने प्रश्न किया—भगवान् शंकर तो राजी-खुशी हैं न?

ब्राह्मण ने रुआंसा-सा होकर उत्तर दिया—महाराज क्या पूछते हो, वे तो चल बसे।

यह सुनकर राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। वह कहने लगा—भला शंकर भगवान् की मृत्यु कैसे हो सकती है, वे तो काल के भी काल हैं?

ब्राह्मण ने कहा—आप विश्वास कीजिये। मैं आपके सामने भगवान् शंकर की मौत का सबूत पेश करूँगा। उनके घर की हालत सुनिये—शंकरजी का आधा शरीर

तो विष्णु भगवान् ने हर लिया। बाकी आधा पार्वती ने। उनके मस्तक पर जो भगवती गंगा थीं, वह सागर में चली गई, चन्द्रमा की कला आकाश जा पहुँची। और महाराज, नागनाथ-साँपनाथ जो थे, सब पाताल चले गये। भगवान् शंकर की दो खास बातें थीं, एक त्रिलोकी की हुकूमत वे करते थे, और सब कुछ जानते थे, ये दोनों बातें आपमें आ गई। बस; अब उनकी एक ही चीज बाकी रह जाती है—भीख माँगना। वह मेरे पल्ले पड़ा महाराज!

संकर्षण की इस सूझ-बूझ से भरी बात को सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने ब्राह्मण से कहा—ब्रह्मदेव, आपकी जो इच्छा हो, सो माँगो। मुँहमाँगी चीज दूँगा।

ब्राह्मण ने सोच-विचार कर कहा—महाराज, मैं बहुत गरीब हूँ। पेट भरकर भोजन भी नसीब नहीं होता। घर में छोटे-छोटे बच्चे हैं। उन्हें दूध तक नहीं मिलता। आप कोई अच्छी-सी दुधारु गाय-भैंस दिलवा दें तो भगवान् आपका भला करे।

राजा ने उसी समय मंत्री से कहा कि इन्हें दूध देने वाली एक अच्छी-सी भैंस दे दो। मंत्री ने नीचे के कर्मचारियों से कहा। वह नौकर शैतान निकले। उन्होंने एक ऐसी भैंस लाकर उस ब्राह्मण को दे दी, जो कभी

ब्याई न थी। वह देखने में तो मोटी-ताजी थी, पर थी बूढ़ी।

ब्राह्मण ने उस भैंस को नजर भरकर जो देखा तो

सब समझ गया।

फिर वह ब्राह्मण उस भैंस के पास गया और उसके कान से मुंह लगाकर कुछ गुनगुनाने लगा। फिर उसके मुंह से अपना कान लगाया और थोड़ी देर बाद वापस आ गया।

ब्राह्मण को यह सब करते देखकर राजा को आश्चर्य हुआ। उसने ब्राह्मण से पूछ ही लिया—यह आपने क्या किया ? मुझे भी समझाइये।

ब्राह्मण ने बड़ी चतुराई से उत्तर दिया—महाराज, मैंने देखा कि इसके कोई बच्चा नहीं है तो इससे पूछा कि क्या तु गर्भवती है ? तब उसने उत्तर दिया—मेरे पति महिषासुर को सतयुग में दुर्गादेवी ने मार डाला था। तब से आज तक मैं विधवा-धर्म का पालन कर रही हूं। अब तो मेरे दांत भी गिरने लगे हैं और थन भी ढीले पड़ गये हैं। मैं बूढ़ी हो चुकी हूं। ऐसी हालत में भी तू मुझसे पूछ रहा है कि गर्भवती है कि नहीं, तुझे शर्म नहीं आती।

ब्राह्मण की बुद्धि-चातुरी से राजा बहुत प्रसन्न हुआ। और उसे कई अच्छी भैंसे दान दीं। और अपने उन नौकरों को सजा दी, जिन्होंने ब्राह्मण को जान-बूझकर बूढ़ी भैंस थमा दी थी।

● ● ●

अमरावती नगरी में एक ब्राह्मण परिवार रहता

था। बड़ा विद्वान् किन्तु अति दरिद्र। उस परिवार में केवल चार जने थे। ब्राह्मण, उसकी स्त्री, पुत्र और पुत्रवधू। जब उन्हें मालूम हुआ कि राजा भोज विद्वानों का खूब आदर-सत्कार करता है और मुँह-माँगी वस्तु देता है, तो वे चारों भोज की राजधानी धारा नगरी की ओर चल पड़े।

धारा नगरी से कुछ दूर उन्हें एक ब्राह्मण मिला। उस ब्राह्मण ने पूछा—कहाँ जाते हो भाई ?

उत्तर मिला—सारे वेद-शास्त्रों को जानने वाले राजा भोज के पास हम जा रहे हैं।

ब्राह्मण ने कहा—बिलकुल झूठी बात है। वह तो कुछ भी पढ़ना-लिखना नहीं जानता। अगर जानता होता तो मेरे माथे में जितना लिखा था, उससे बहुत ज्यादा धन वह मुझे नहीं देता।

यह कहकर ब्राह्मण ने अपना रास्ता लिया। पर उसकी बात सुन यह चारों मन-ही-मन खूब प्रसन्न हुए। धारा नगरी के बाहर एक वट वृक्ष के नीचे उन्होंने डेरा डाल दिया और राजा भोज के पास सन्देश भेजा कि एक सरस्वती कुटुम्ब तुम्हारे नगर के पास आया है, अगर आज्ञा हो तो नगर में प्रवेश करें।

सरस्वती कुटुम्ब का नाम सुना, तो राजा भोज के मन में विचार आया कि परीक्षा लेकर देखूं कि वास्तव में यह कुटुम्ब सरस्वती कुटुम्ब कहलाने के योग्य है कि

नहीं।

राजा ने एक लोटा दूध लबालब भरकर अपने चतुर नौकर के हाथ सरस्वती कुटुम्ब के पास भेजा। नौकर ने उस दूध के लोटे को ब्राह्मण के हाथ देकर कहा कि यह राजा जी ने आपके लिए भेजा है।

ब्राह्मण राजा की चतुराई जान गया। राजा का इशारा था कि जैसे यह लोटा दूध से लबालब भरा हुआ है, वैसे ही मेरी धारा नगरी भी मनुष्यों से भरी हुई है और अब उसमें कोई जगह खाली नहीं है।

ब्राह्मण ने उस दूध-भरे लोटे में खांड डाल दी और जो नौकर उसे लेकर आया था, उसे वैसे ही वापस ले जाने को कहा।

ब्राह्मण ने उसमें खांड डालकर यह दिखाया कि जैसे स्थान न होते हुए भी खांड उस लोटे में समा गई, वैसे ही हम भी धारा नगरी में समा सकेंगे।

नौकर ने सारी बात राजा को सुना दी। राजा ब्राह्मण की चतुराई से बहुत प्रसन्न हुआ। पर राजा ने सोचा कि कोई और परीक्षा लेनी चाहिए। यह सोच, वेश बदलकर वहां पहुँचा, जहां वह सरस्वती कुटुम्ब ठहरा हुआ था। पूछने पर मालूम हुआ कि ब्राह्मण और ब्राह्मण का पुत्र दोनों तालाब पर स्नान-सन्ध्या आदि करने गये हैं। राजा भी वहीं पहुँचा। वह तालाब के किनारे सन्ध्या कर रहे ब्राह्मण के पुत्र के पास जा बैठे।

और ब्राह्मण के पुत्र को दिखा-दिखाकर अंजलि भर-भर कर पानी पीने लगे। उसका मतलब यह था कि अगस्त्य ऋषि ने तो आचमन करते हुए ही सारे समुद्र को पी डाला था, तुम इस तालाब के पानी को ही पीकर दिखाओ तो जानूं।

ब्राह्मण का पुत्र सारी बात समझ गया। उसने किनारे से छोटे-छोटे पत्थर-कंकर उठाये और राजा को दिखाकर तालाब में फेंक दिए। यह देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और वापस महलों में लौट आया। पत्थर-कंकर फेंककर ब्राह्मण के लड़के ने राजा को यह बात बताई कि राजा रामचन्द्र क्षत्री थे और तुम भी क्षत्री हो। उन्होंने समुद्र पर पत्थर की बड़ी-बड़ी शिलायें तैरा दी थीं, तुम इन छोटे-छोटे पत्थर-कंकरों को ही तैराओ तो जानूं।

राजा इस उत्तर से उस कुटुम्ब की विद्या-बुद्धि और चातुरी से बहुत प्रभावित हुआ और दान-मान से उनको सन्तुष्ट किया।

● ● ●

राजा भोज कालिदास को कितना प्यार करते थे, यह नीचे लिखी घटना से मालूम होगा। एक बार भोज और कालिदास में मनमुटाव हो गया। फलस्वरूप कालिदास भोज के दरबार से अलग हो कहीं गुप्त रूप से रहने लगे। मगर उसके बाद भोज बेचैन रहने लगे।

कालिदास के बिना भोज को अपना दरबार सूना और फीका दिखाई देने लगा। कालिदास को फिर से पाने के लिए उनका दिल तड़पने लगा। भोज ने पता लगाने की कोशिश की, पर पता नहीं लगा। अन्त में उसने एक नई युक्ति सोची।

राजा भोज ने चारों ओर मुनादी करवा दी कि जो कोई नया श्लोक बनाकर लायेगा, उसे एक लाख रुपये इनाम में दिये जाएँगे। लेकिन साथ ही अपने दरबार के ऐसे तीन पंडित भी सिखा-पढ़ाकर ठीक कर लिये, जिनमें एक तो किसी श्लोक को एक बार सुन-कर ही याद कर लेता, दूसरा दो बार सुनकर, और तीसरा तीन बार सुनकर। फलस्वरूप जब कोई नया श्लोक लेकर आता तो उनमें से पहला तो एक बार में ही उस श्लोक को सुनकर याद कर लेता और झट सुना देता और उसे पुराना ठहरा देता। और उसके बाद पारी-पारी से दूसरा और तीसरा पंडित भी उसे सुनाकर उस नये श्लोक का पुराना होना बिलकुल साबित कर देता। फलस्वरूप कोई भी व्यक्ति इनाम पाने में कामयाब न हो पाता।

कालिदास को छिपे रूप से इस बात का पता था। उसने राजा भोज को छकाने का विचार किया। फलस्वरूप उसने एक बूढ़े ब्राह्मण को एक श्लोक देकर राज-सभा में भेजा। श्लोक का अर्थ नीचे लिखे

अनुसार था—

महाराज भोज ! आपका कल्याण होवे ! आपके पिता बड़े धार्मिक थे, इसे सारा संसार जानता है। आपके पिता ने निन्यानवे करोड़ रत्न मुझसे कर्ज में लिये थे। इस सचाई को आपके दरबार के सारे पंडित जानते हैं। इसलिए अपने पिता का कर्ज आप चुका दें। यदि आपके पंडित इस सचाई से इनकार करें तो आप इस श्लोक का रचयिता मुझे मानकर एक लाख रुपये इनाम के दें।"

इस श्लोक को सुनकर दरबार के पंडितों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। एक-दूसरे का मुँह वे देखने लगे। यदि श्लोक को पुराना बताते हैं तो राजा भोज निन्यानवे करोड़ रत्नों के कर्जदार ठहरते हैं। यदि नया बताते हैं तो एक लाख रुपये इनाम देने पड़ेंगे। लेकिन राजा भोज उस श्लोक के भीतर की चतुराई समझ गये। और मन-ही-मन जान गये कि इस श्लोक का रचयिता कालिदास के सिवा और कोई दूसरा नहीं हो सकता। भोज ने ब्राह्मण को एक लाख रुपये दिला दिये और फिर अकेले में उससे श्लोक के बनाने वाले का पता-ठिकाना पूछ स्वयं वहाँ जा पहुँचे। देखा तो वह व्यक्ति स्वयं कालिदास थे। राजा भोज उन्हें गले लगाकर बड़े प्यार और आदर से राज-सभा में फिर लिवा लाये।

बताया जा चुका है कि राजा भोज स्वयं बहुत बड़े विद्वान् भी थे। उन्होंने राजाओं के भोग-विलासी

जीवन में डूबे न रहकर जीवन-भर सरस्वती की आराधना की थी। फलस्वरूप उन्होंने अनेक विषयों पर अनेक ग्रन्थ भी लिखे। उनके लिखे ग्रन्थों की संख्या तीस-पैंतीस तक बताई जाती है। ज्योतिष, योगशास्त्र, राजनीति, धर्मशास्त्र, अलंकारशास्त्र, नाटक, काव्य, व्याकरण, वैद्यक आदि अनेक विषयों पर उनकी बड़ी कीमती पुस्तकें आज भी मौजूद हैं।

इनके अतिरिक्त राजा भोज के सभा-कवि दामोदर मिश्र ने 'हनुमन्नाटक' नामक मशहूर संस्कृत नाटक की रचना की। इस नाटक के बारे में कहा जाता है कि यह हनुमान जी का बनाया हुआ है। हनुमान ने एक रामायण लिखकर वाल्मीकि को दिखाई। वाल्मीकि के मन में यह ओछापन पैदा हो गया कि यदि इस रामायण का प्रचार हो गया तो मेरी रामायण को कौन पूछेगा! इसलिए उन्होंने छल से हनुमान-रचित रामायण के उन सभी शिलापत्रों को समुद्र में फिंकवा दिया, जिन पर उस रामायण की खुदाई हुई थी। बाद में वे शिलापत्र समुद्र के किनारे राजा भोज को मिले, जिनका सम्पादन दामोदर मिश्र ने किया।

'शिशुपाल-वध' नामक सुप्रसिद्ध महाकाव्य का रचयिता महाकवि माघ भी राजा भोज का ही दरबारी कवि कहा जाता है। ऐसे अनेक दिग्गज विद्वान् और कवि उस दरबार को सुशोभित किया करते थे।

संसार से एक दिन जाना सबको पड़ता है। राजा भोज के सुयश और प्रताप से जलने वाले अनेक राजा थे। कहा जाता है कि काशी के राजा कर्ण और गुजरात के राजा भीम ने मिलकर धारा नगर पर चढ़ाई कर दी। संयोग से उसी समय राजा भोज का स्वर्गवास हो गया। मृत्यु से कुछ देर पहले भी उन्होंने खूब दान दिया। और अपने मन्त्रियों को आज्ञा दी कि—अरथी को उठाने के समय उनके हाथ अरथी से बाहर रखे जाएँ ताकि लोग इस सचाई को समझ सकें कि—

"स्त्री-पुत्र, जर-जमीन, बाग-बागीचे सब आखिर इसी संसार में धरे रह जाते हैं। आदमी इस संसार में अकेला ही आता है, और अन्त में हाथ-पैर झाड़कर अकेला ही चल देता है।"

भोज से सम्बन्धित एक लोक-कथा

एक समय की बात है कि राजा भोज और माघ पंडित सैर करने गये। लौटते समय रास्ता भूल गये। तब दोनों विचार करने लगे—रास्ता भूल गये, अब किससे पूछें। तब पंडित ने निवेदन किया, "पास ही एक बुढ़िया गेहूँ के खेत की रखवाली करती है, उससे पूछें।"

राजा भोज ने कहा, "हाँ, ठीक है। चलो !"

दोनों बुढ़िया के पास गये और कहा, "राम-राम !"

बुढ़िया बोली, "भाई ! आओ राम-राम।"

तब दोनों बोले, "यह रास्ता कहाँ जायगा ?"

बुढ़िया ने उत्तर दिया, "यह रास्ता तो यहीं रहेगा, इसके ऊपर चलने वाले ही जाएँगे। भाई ! तुम कौन हो ?"

"बहन ! हम तो पथिक हैं।"

बुढ़िया बोली, "पथिक तो दो हैं—एक तो सूरज, दूसरा चन्द्रमा। तुम कौन से पथिक हो ? भाई ! सच बताओ, तुम कौन हो ?"

"बहन ! हम तो पाहुन हैं।"

"पाहुन तो दो हैं। एक तो धन, दूसरा यौवन। भाई ! सच बोलो, तुम कौन हो ?"

भोज बोला, "हम तो राजा हैं।"

"राजा तो दो हैं। एक इन्द्र, दूसरा यमराज। तुम कौन-से राजा हो ?" बुढ़िया बोली।

"बहन हम तो शक्तिवान् हैं।"

"शक्तिवान् तो दो हैं। एक पृथ्वी और दूसरी स्त्री। भाई ! तुम कौन हो ?"

"हम तो साधु हैं।"

"साधु तो दो हैं। एक तो शनि और दूसरा संतोष। तुम कौन-से साधु हो ?"

"बहन ! हम तो परदेशी हैं ।"

"परदेशी तो दो हैं । एक तो जीव और दूसरा पेड़ का पानी । तुम कौन हो ?"

"हम तो गरीब हैं ।"

"गरीब तो दो हैं । एक तो बकरी का जाया (बकरा) और दूसरी लकड़ी ।"

"बहन ! हम तो चतुर हैं ।"

"चतुर तो दो हैं । एक अन्न और दूसरा पानी । तुम कौन हो ? भाई सच बताओ ।"

इस पर राजा भोज और माघ पंडित ने हारकर कहा, "हम तो हारे हुए हैं ।"

बुढ़िया बोली, "हारे हुए दो हैं । एक तो कर्जदार और दूसरा बेटी का बाप । तुम कौन हो ?"

इस पर दोनों बोले, "हम तो कुछ भी नहीं जानते हैं । जानकार तो तू ही है ।"

तब बुढ़िया बोली, "तू राजा भोज है और यह माघ पंडित है । जाओ, यही उज्जैन का रास्ता है ।"

विक्रमादित्य का सिंहासन

भोज की पुरानी राजधानी उज्जयिनी के पास के एक गाँव में एक किसान रहता था । उसने अपनी खेती की रात को रखवाली करने के लिए एक मचान बाँधा ।

पहला ही दिन था. वह मचान पर चढ़ा ही था कि न मालूम उसे क्या हो गया। वह पुकार-पुकार कर कहने लगा—"अरे, जल्दी करो। हमारे दीवान और

सिपाहियों को बुलाओ। यहाँ एक बड़ा किला बनवा कर लड़ाई का सारा सामान इकट्ठा करो। क्योंकि राजा भोज से लड़ाई करके उसे मारना होगा। उसने हमारा राज्य हड़प लिया है।"

संयोग की बात है कि उसी समय राजा भोज के चार सिपाही वहाँ से गुजर रहे थे। वे खड़े होकर सुनने लगे कि बात क्या है? उन्होंने विचार किया कि उस किसान को पकड़कर राजा के पास ले चलें। पर उनमें से एक ने कहा—"इस समय तो हमें वही काम करना चाहिए, जिसके लिए आए हैं, इससे फिर समझ लेंगे।"

वे अपने काम से छुट्टी पाकर राजा भोज के पास पहुँचे। उन्होंने राजा भोज को किसान की बात भी कह सुनाई। यह बात सुनकर राजा भोज उन सिपाहियों के साथ मचान के पास पहुँचा। उस समय भी वह किसान वैसा ही कह रहा था—"राजा भोज को पकड़-कर मेरे सामने लाओ। मैं उसे उसके किये की सजा देना चाहता हूँ।"

राजा भोज किसान की बात सुनकर मन-ही-मन घबराया और वापस अपने महलों को लौट गया।

दूसरे दिन उसने ज्योतिषियों को बुलाकर सारा हाल सुनाया। ज्योतिषियों ने ज्योतिष लगाकर बताया कि उस स्थान में लक्ष्मी का निवास है, वह जगह खोदी जाय तो बहुत धन-दौलत मिल सकती है।

फिर क्या था। राजा भोज ने सैकड़ों मजदूर उस जगह को खुदाई के लिए लगवा दिए।

वे अभी थोड़ा ही खोद पाए थे कि कुदालों से किसी सख्त चीज के टकराने की आवाज आई। अब वे सावधानी से खोदने लगे। कुछ और खोदने पर एक सिंहासन निकल आया। राजा भोज उस सिंहासन को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसके चारों पायों की ओर आठ-आठ पुतलियाँ बनी हुई थीं। और हर एक पुतली के हाथ में एक-एक कमल का फूल था। उस सिंहासन की भली प्रकार सफाई-पोंछाई की गई। तब तो वह और भी चमकने लगा।

सब कहने लगे—"महाराज, यह सिंहासन तो आपके बैठने योग्य है।" यह बात राजा के मन में पहले ही आ चुकी थी। आखिर ज्योतिषियों ने राशि-नक्षत्र देखकर उस सिंहासन पर बैठने के लिए एक दिन निश्चित कर दिया। उस दिन सारे नगर में खूब चहल-पहल थी। चारों ओर बाजे बज रहे थे और राजा भोज की जयकार के नारे गूँज रहे थे।

अब सिंहासन पर बैठने का मुहूर्त आया। पुरोहित महाराज मंत्र पढ़ रहे थे। राजा भोज ने अपना दाहिना पाँव बढ़ाकर ज्यों ही सिंहासन पर रखना चाहा, त्यों ही बत्तीस-की-बत्तीस पुतलियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं। उनको यों हँसते देख राजा भोज का तो चेहरा ही

उतर गया और वह ठिठककर खड़ा हो गया।

राजा को यों खड़ा देखकर उनमें से एक पुतली बोल उठी—ऐ राजा भोज, पहले मैं जो कहती हूँ उसे सुन लो, फिर सिंहासन पर बैठना। यह सिंहासन महाराज वीर विक्रमादित्य का है। इस पर वही बैठ सकता है जो विक्रमादित्य के बराबर पराक्रमी और न्यायी हो।

फिर उसने वीर विक्रमादित्य के सम्बन्ध में एक कहानी सुनाई। और फिर कहा कि हे राजा भोज, यह सिंहासन उसी के लिए है जो वीर विक्रमादित्य के समान प्रतापी हो। अभी आपका प्रताप उतना नहीं है, इसलिए आप इस सिंहासन पर बैठने का हठ मत कीजिये। पुतली की बात सुनकर राजा भोज महलों को वापस लौट गया। फिर जब दूसरे दिन बैठने लगा तो दूसरी पुतली बोल उठी। फिर तीसरे दिन तीसरी, चौथे चौथी और पाँचवें पाँचवीं। पूरे बत्तीस दिन इसी प्रकार निकल गये। बत्तीसवीं पुतली कहानी कहकर राजा विक्रमादित्य की याद कर-करके रोने लगी और तब बत्तीसों पुतलियाँ अपने पंख फैलाकर, राजा विक्रमादित्य का जयकार करती हुई सिंहासन समेत स्वर्ग की ओर उड़ चली।

बत्तीस पुतलियों द्वारा सुनाई गई बत्तीस कहानियाँ 'सिंहासन बत्तीसी' नामक पुस्तक में संग्रहीत हैं।